छह अठारहं चारि, ग़ाल्हि चवनि था हिकिड़ी,
भग़ति करे भग़वान जी, नाना भरम निवारि,
मिली माया मोह सां, हीरो जनमु न हारि,
साझुरि पाणु संभारि, मतां पवें पोइ डुखनि में.

अपने काव्य द्वारा वेदांत की व्याख्या करने वाले महाकवि सामी इस श्लोक में वेद-पुराण ग्रंथों का संदर्भ देते हुए कहते हैं कि चार वेद, छह दर्शनशास्त्र और अठारह पुराण भी यही एक बात कहते हैं कि हे मनुष्य! तुम परमेश्वर की भक्ति करके अपने नाना प्रकार के भ्रम-भ्रांतियों का निवारण करो। माया और मोह में फँस कर तुम अपना हीरे जैसा अनमोल जीवन व्यर्थ मत गँवाओ। इस बात को समझ कर तुम जल्द ही अपने आप को सँभालो, जाग्रत हो जाओ, नहीं तो तुम दुखों की खाई में जा पड़ोगे।

दर्शन शास्त्र/तत्त्वज्ञान में ब्रह्म जीव और जगत का वर्णन मिलता है। दर्शनशास्त्र छह हैं- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत। उपनिषद् आदि वेद के ही अंतिम भाग हैं, जिन में जगत्, आत्मा एवं ब्रह्म की व्याख्या है। हिन्दुओं के धर्म विषयक 18 ग्रंथ हैं, जिन को 'पुराण' कहा जाता है। ब्रह्मपुराण, गरुड़पुराण, शिवपुराण, नारदपुराण, स्कंदपुराण, अग्निपुराण आदि पुराणों के चार लाख श्लोकों में सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय का वर्णन मिलता है। अध्यात्म, धर्म, ब्रह्म आदि विषयों का वर्णन करने वाले हैं वेद। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

महाकवि सामीजी ने अपने अनेक श्लोकों में उपर्युक्त सभी ग्रंथों का सार बताने का प्रयत्न किया है। यहाँ इस श्लोक में भी यही बात बताते हैं कि हे जीव! (मनुष्य) ईश्वर/परमेश्वर की भक्ति द्वारा ही अपने भ्रम दूर कर सकोगे और अपने अनमोल जन्म को सार्थक कर सकोगे। इसलिए अपने अंदर ज्ञान का प्रकाश निर्माण करने का प्रयत्न करो, अपनी अंतरात्मा को पहचानो। इसी से तुम अनेक दुखों से मुक्ति पा सकोगे और अंत में अपना जीवन सफल कर सकोगे। सभी संतों ने भी परमेश्वर के स्मरण और एकाग्र-चित्त से भक्ति करने की सलाह दी है। अंतर्यामी परमात्मा के सुमिरन के संबंध में संत कबीर कहते हैं-

सुमिरन सुरति लगाय के, मुख ते कछु न बोल।
बाहर के पट देइ के, अंतर के पट खोल।।

■